

International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

भारत में स्टार्टअप संस्कृति का उभरता परिदृश्य: उद्यमिता विकास एवं आर्थिक प्रभावों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Arti Mourya

Research Scholar, Department of Commerce, Malwanchal University, Indore

Dr. More Tarachand Ambar

Supervisor, Department of Commerce, Malwanchal University, Indore

Dr. Kuldeep Agnihotri

Co- Supervisor, Professor & Principal, ISBA Institute of Professional Studies, Indore (M.P.)

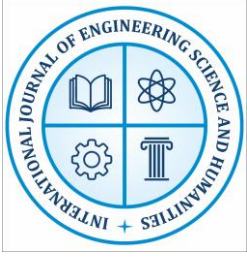
सारांश

भारत आज विश्व के सबसे बड़े स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्रों में से एक है। प्रस्तुत शोध पत्र भारतीय स्टार्टअप एवं उद्यमिता के विकास की संभावनाओं, चुनौतियों एवं भविष्य की दिशा का अनुभवजन्य (empirical) अध्ययन प्रस्तुत करता है। अध्ययन का उद्देश्य यह जाँचना है कि सरकारी नीतियाँ, वित्तीय संसाधनों की उपलब्धता, तकनीकी नवाचार, सरकारी समर्थन तथा भविष्य की वृद्धि-संभावनाएँ—ये पाँच कारक भारतीय स्टार्टअप के विकास को किस सीमा तक प्रभावित करते हैं। इस हेतु एक संरचित प्रश्नावली एवं पाँच-बिंदु लिंकर्ट स्केल के माध्यम से 350 उत्तरदाताओं से प्राथमिक आंकड़े एकत्र किए गए। एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण वर्णनात्मक सांख्यिकी (आवृत्ति, प्रतिशत, माध्य एवं मानक विचलन) तथा One-Sample t-Test के माध्यम से किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि पाँचों आयामों का माध्य तटस्थ बिंदु (3.0) से पर्याप्त रूप से अधिक रहा (3.78 से 4.21 के मध्य), तथा सभी पाँच परिकल्पनाओं के लिए p-मान 0.001 से कम प्राप्त हुआ, जिससे सभी वैकल्पिक परिकल्पनाएँ सांख्यिकीय रूप से स्वीकृत हुईं। तकनीकी नवाचार (Mean = 4.14) एवं भविष्य की वृद्धि-संभावना (Mean = 4.21) सर्वाधिक प्रबल कारक पाए गए। द्वितीयक आँकड़े भी इन निष्कर्षों की पुष्टि करते हैं—अक्टूबर 2025 तक DPIIT-मान्यता प्राप्त स्टार्टअप की संख्या लगभग 1.98 लाख (1,97,692) तक पहुँच गई। अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि भारतीय स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र का विकास नीतिगत, वित्तीय, तकनीकी एवं भविष्योन्मुखी कारकों के सम्मिलित प्रभाव से संचालित होता है।

मुख्य शब्द (Keywords): स्टार्टअप, उद्यमिता, सरकारी नीति, तकनीकी नवाचार, वित्तपोषण, परिकल्पना परीक्षण, लिंकर्ट स्केल

1. प्रस्तावना

उद्यमिता किसी भी अर्थव्यवस्था की रीढ़ होती है। यह न केवल नवाचार एवं रोज़गार-सृजन को प्रोत्साहित करती है, बल्कि सामाजिक समस्याओं के समाधान का एक सशक्त माध्यम भी बनती है। एक जीवंत उद्यमशील



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

वातावरण पूँजी को उत्पादक दिशाओं में प्रवाहित करता है, श्रम-बाज़ार में गतिशीलता लाता है तथा प्रतिस्पर्धा के माध्यम से उपभोक्ताओं को बेहतर उत्पाद एवं सेवाएँ उपलब्ध कराता है। 'स्टार्टअप' शब्द उन नवोदित उद्यमों को संदर्भित करता है जो किसी नवाचारपूर्ण उत्पाद, सेवा या व्यवसाय-मॉडल के आधार पर तेज़ी से विस्तार (scale) करने की क्षमता रखते हैं। पारंपरिक लघु एवं मध्यम उद्यमों से स्टार्टअप इस अर्थ में भिन्न होते हैं कि उनका मूल लक्ष्य केवल स्थिर लाभ नहीं, बल्कि किसी दोहराने-योग्य एवं विस्तार-योग्य मॉडल के माध्यम से तीव्र वृद्धि होता है। भारत में स्टार्टअप संस्कृति ने पिछले एक दशक में जिस गति से जड़ें जमाई हैं, वह विश्व-पटल पर उल्लेखनीय रही है।

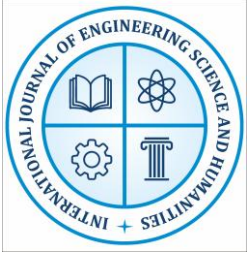
भारत सरकार के अनुसार किसी इकाई को 'स्टार्टअप' की औपचारिक मान्यता तभी मिलती है जब वह निगमन के 10 वर्ष के भीतर हो, उसका वार्षिक कारोबार किसी भी वित्त वर्ष में ₹100 करोड़ से अधिक न रहा हो, तथा वह नवाचार एवं विस्तार-योग्यता पर केंद्रित हो। यह मान्यता उद्योग संवर्धन एवं आंतरिक व्यापार विभाग (DPIIT) द्वारा प्रदान की जाती है, जो कर-छूट, स्व-प्रमाणन एवं बौद्धिक संपदा संबंधी अनेक लाभों का द्वार खोलती है। 2016 में 'स्टार्टअप इंडिया' पहल के शुभारंभ के बाद से इस क्षेत्र में अभूतपूर्व विस्तार हुआ है—2014 के लगभग 350 मान्यता प्राप्त स्टार्टअप्स से बढ़कर अक्टूबर 2025 तक यह संख्या लगभग 1.98 लाख (1,97,692) तक पहुँच गई। इस अवधि में औसतन प्रत्येक घंटे एक नया स्टार्टअप पंजीकृत होता रहा, जो इस विस्तार की गति एवं निरंतरता को दर्शाता है।

इस विस्तार के पीछे अनेक संरचनात्मक कारक हैं—सस्ती डेटा-दरों के कारण बढ़ती डिजिटल पहुँच, विशाल युवा जनसांख्यिकी, एक अत्यंत बड़ा घरेलू बाज़ार तथा एक सहायक नीतिगत ढाँचा। तथापि, इस मात्रात्मक वृद्धि के साथ-साथ अनेक चुनौतियाँ भी सामने आई हैं, जैसे फंडिंग की अनिश्चितता, लाभप्रदता का दबाव, प्रतिभा-प्रतिधारण एवं असमान भौगोलिक पहुँच। 2020-2022 के 'यूनिकॉर्न उभार' के पश्चात 2022-2023 का 'फंडिंग विंटर' इस बात का प्रमाण है कि केवल पूँजी-संचालित वृद्धि टिकाऊ नहीं होती।

यद्यपि यह मात्रात्मक वृद्धि प्रभावशाली है, फिर भी यह प्रश्न महत्वपूर्ण है कि वास्तव में कौन-से कारक भारतीय स्टार्टअप्स के विकास को संचालित करते हैं तथा उनके समक्ष कौन-सी प्रमुख चुनौतियाँ विद्यमान हैं। इन्हीं प्रश्नों के अनुभवजन्य उत्तर खोजने हेतु प्रस्तुत शोध पत्र में 350 उत्तरदाताओं से प्राथमिक आंकड़े एकत्र कर पाँच प्रमुख कारकों—सरकारी नीतियाँ, वित्तीय संसाधन, तकनीकी नवाचार, सरकारी समर्थन एवं भविष्य की वृद्धि—के प्रभाव का सांख्यिकीय परीक्षण किया गया है। यह अध्ययन इन धारणाओं को मापने हेतु पाँच-बिंदु लिंकर्ट स्केल का उपयोग करता है तथा निष्कर्षों को अद्यतन द्वितीयक आँकड़ों के संदर्भ में रखता है।

1.1 अध्ययन का महत्व

यह अध्ययन नीति-निर्माताओं, निवेशकों, संस्थापकों एवं शोधकर्ताओं—सभी के लिए प्रासंगिक है। नीति-निर्माताओं के लिए यह प्रभावी प्रोत्साहन-संरचना तैयार करने में सहायक है; निवेशकों के लिए यह जोखिम एवं अवसर के मूल्यांकन में; तथा संस्थापकों के लिए यह यथार्थवादी अपेक्षाएँ निर्धारित करने में उपयोगी है। चूँकि



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

अध्ययन प्राथमिक सर्वेक्षण एवं अद्यतन द्वितीयक आँकड़ों (2025) दोनों को समेकित करता है, इसके निष्कर्ष व्यावहारिक एवं समकालीन दोनों दृष्टियों से मूल्यवान हैं।

1.2 पारिस्थितिकी तंत्र का वर्तमान संदर्भ

अध्ययन को संदर्भ प्रदान करने हेतु भारतीय स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र की वर्तमान स्थिति का संक्षिप्त अवलोकन आवश्यक है। अक्टूबर 2025 तक DPIIT-मान्यता प्राप्त स्टार्टअप्स की संख्या 1,97,692 (लगभग 1.98 लाख) तक पहुँच गई, जिन्होंने 21 लाख से अधिक प्रत्यक्ष रोज़गार सृजित किए। यूनिकॉर्न (एक अरब डॉलर से अधिक मूल्यांकन वाले स्टार्टअप) की संख्या 2025 के अंत तक लगभग 125 रही, जिनका संयुक्त मूल्यांकन 366 अरब डॉलर से अधिक था। 2025 में कुल फंडिंग लगभग 15 अरब डॉलर रही, जो पूर्व वर्ष की तुलना में कम थी—यह दर्शाता है कि पूँजी-प्रवाह अब अधिक चयनात्मक एवं अनुशासित हो गया है।

इन आँकड़ों से दो प्रवृत्तियाँ स्पष्ट होती हैं: एक ओर मात्रात्मक विस्तार निरंतर जारी है, तो दूसरी ओर पारिस्थितिकी तंत्र 'मूल्यांकन-केंद्रित वृद्धि' से 'लाभप्रदता-केंद्रित स्थिरता' की ओर परिपक्व हो रहा है। यही गुणात्मक संक्रमण इस अध्ययन के पाँच कारकों—विशेषकर वित्तीय संसाधन एवं तकनीकी नवाचार—के महत्व को रेखांकित करता है।

2. साहित्य समीक्षा

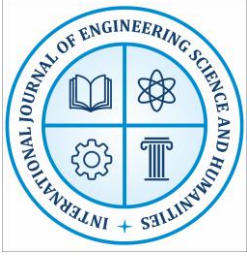
भारतीय स्टार्टअप परिदृश्य पर अनेक अध्ययन एवं उद्योग-रिपोर्टें प्रकाशित हुई हैं, जो इस अध्ययन के लिए सैद्धांतिक एवं तथ्यात्मक आधार प्रदान करती हैं। विभिन्न अध्ययनों एवं रिपोर्टों की समीक्षा से अध्ययन के पाँच आयामों का औचित्य पुष्ट होता है। यह समीक्षा विषयगत रूप से पाँच भागों में संगठित है, जो अध्ययन के पाँच कारकों के अनुरूप हैं।

2.1 सरकारी नीतियाँ एवं संस्थागत ढाँचा

सरकारी पहलों के संदर्भ में, DPIIT एवं Startup India के आँकड़े दर्शाते हैं कि 'स्टार्टअप इंडिया', 'डिजिटल इंडिया' एवं 'मेक इन इंडिया' जैसी नीतियों ने पंजीकरण-सरलीकरण, कर-छूट एवं वित्त-पोषण-योजनाओं के माध्यम से एक सक्षम वातावरण तैयार किया है। आयकर-छूट (धारा 80-IAC), स्व-प्रमाणन, पेटेंट/IPR में फास्ट-ट्रैक सहायता तथा सार्वजनिक खरीद में छूट जैसे प्रावधानों ने संस्थापकों के आरंभिक जोखिम एवं अनुपालन-बोझ को कम किया है। अनेक विश्लेषकों ने रेखांकित किया है कि नीतिगत ढाँचे की उपस्थिति स्वयं में उद्यमशील आत्मविश्वास का एक स्रोत है, क्योंकि यह उद्यमिता को एक सम्मानजनक एवं व्यवहार्य करियर-विकल्प के रूप में स्थापित करती है।

2.2 वित्तपोषण एवं पूँजी की उपलब्धता

वित्तपोषण के संदर्भ में, 2022-2023 के 'फंडिंग विंटर' पर केंद्रित अध्ययन दर्शाते हैं कि वैश्विक वेंचर कैपिटल के संकुचन से भारतीय स्टार्टअप-फंडिंग में उल्लेखनीय गिरावट आई। बढ़ती वैश्विक ब्याज-दरों एवं जोखिम के प्रति निवेशकों की बदलती धारणा ने पूँजी-प्रवाह को संकुचित किया, जिसके पश्चात निवेशक अधिक चयनात्मक हो गए तथा लाभप्रदता एवं सुदृढ़ इकाई-अर्थशास्त्र को प्राथमिकता दी जाने लगी। 2025 में कुल फंडिंग लगभग



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

15 अरब डॉलर रही, जो पूर्व वर्ष की तुलना में कम थी। यह साहित्य वित्तीय संसाधनों की कमी को एक प्रमुख एवं सतत बाधा के रूप में स्थापित करता है, विशेषकर प्रारंभिक-चरण के एवं गैर-महानगरीय स्टार्टअप के लिए।

2.3 तकनीकी नवाचार

तकनीकी नवाचार पर केंद्रित अध्ययन कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग, ऑटोमेशन एवं डिजिटल प्लेटफॉर्म को स्टार्टअप-प्रतिस्पर्धात्मकता का प्रमुख आधार मानते हैं। WIPO के Global Innovation Index जैसे अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशन भी नवाचार-क्षमता एवं उद्यमशील सफलता के मध्य प्रबल संबंध की पुष्टि करते हैं। हाल के वर्षों में पारिस्थितिकी तंत्र का डीप-टेक, अंतरिक्ष-तकनीक एवं AI की ओर क्रमिक संक्रमण इस बात का संकेत है कि नवाचार अब केवल उपभोक्ता-इंटरनेट तक सीमित नहीं रहा, बल्कि अनुसंधान-गहन क्षेत्रों की ओर भी विस्तृत हो रहा है, जो अधिक गहरी एवं रक्षात्मक तकनीकी क्षमताओं का निर्माण करते हैं।

2.4 सरकारी समर्थन की प्रभावशीलता

सरकारी समर्थन की ज़मीनी प्रभावशीलता पर केंद्रित अध्ययन एक मिश्रित चित्र प्रस्तुत करते हैं। यद्यपि योजनाएँ सहायक हैं, फिर भी अनेक संस्थापक—विशेषकर छोटे शहरों एवं ग्रामीण क्षेत्रों में—जागरूकता की कमी, जटिल दस्तावेज़ीकरण एवं अनुमोदन में विलंब जैसी बाधाओं के कारण उनका पूर्ण लाभ नहीं उठा पाते। यह साहित्य नीतियों के अस्तित्व एवं उनकी पहुँच के बीच के अंतराल को रेखांकित करता है।

2.5 भविष्य की वृद्धि-संभावनाएँ

भविष्य की वृद्धि के संदर्भ में, विशाल घरेलू बाज़ार, युवा जनसांख्यिकी एवं बढ़ते डिजिटल अंगीकरण को प्रायः दीर्घकालिक आशावाद के आधार के रूप में चिह्नित किया गया है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि स्थिर निवेश-प्रवाह एवं बेहतर होते बुनियादी ढाँचे के बल पर भारत आने वाले वर्षों में विश्व के शीर्ष स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्रों में अपना स्थान बनाए रखेगा।

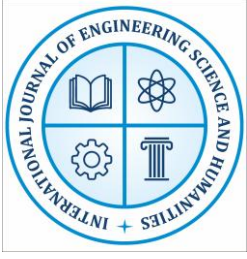
2.6 शोध-अंतराल

उपलब्ध साहित्य मुख्यतः द्वितीयक आँकड़ों एवं वृहद-स्तरीय (macro) रुझानों पर केंद्रित है। विभिन्न हितधारकों—संस्थापकों, कर्मचारियों, विद्यार्थियों एवं पेशेवरों—की धारणाओं पर आधारित प्राथमिक, अनुभवजन्य अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित हैं। प्रस्तुत अध्ययन इसी अंतराल को संबोधित करता है, जिसमें 350 उत्तरदाताओं की धारणाओं का सांख्यिकीय परीक्षण कर निष्कर्ष निकाले गए हैं, तथा प्राथमिक निष्कर्षों को अद्यतन (2025) द्वितीयक आँकड़ों के संदर्भ में रखा गया है।

3. अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- स्टार्टअप के विकास में सरकारी नीतियों के प्रभाव का मूल्यांकन करना।
- स्टार्टअप के विकास पर वित्तीय संसाधनों की कमी के प्रभाव का विश्लेषण करना।
- स्टार्टअप की सफलता में तकनीकी नवाचार की भूमिका का अध्ययन करना।



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

- उद्यमिता के विकास में सरकारी समर्थन की भूमिका का मूल्यांकन करना।
- भारतीय स्टार्टअप की भविष्य की वृद्धि-संभावनाओं के संबंध में उत्तरदाताओं की धारणा का अध्ययन करना।

4. अनुसंधान पद्धति

किसी भी शोध की विश्वसनीयता एवं वैधता काफी हद तक अपनाई गई अनुसंधान पद्धति पर निर्भर करती है। प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक (Descriptive and Analytical) शोध अभिकल्प को अपनाया गया है। अध्ययन मूलतः मात्रात्मक (Quantitative) प्रकृति का है, जिसमें संरचित प्रश्नावली के माध्यम से संख्यात्मक आंकड़े एकत्र कर उनका सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया।

4.1 समष्टि एवं प्रतिदर्श

अध्ययन की समष्टि में भारतीय स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से संबद्ध व्यक्ति—संस्थापक, उद्यमी, कर्मचारी, विद्यार्थी एवं पेशेवर—सम्मिलित हैं। चूँकि सम्पूर्ण समष्टि का अध्ययन व्यावहारिक नहीं है, अतः 350 उत्तरदाताओं का एक प्रतिनिधि प्रतिदर्श लिया गया। 350 का प्रतिदर्श-आकार One-Sample t-Test जैसे parametric परीक्षणों के लिए पर्याप्त माना जाता है, क्योंकि केंद्रीय सीमा प्रमेय के अनुसार बड़े प्रतिदर्श में माध्य का प्रतिचयन-वितरण सामान्य वितरण के निकट पहुँच जाता है।

4.2 प्रतिचयन विधि

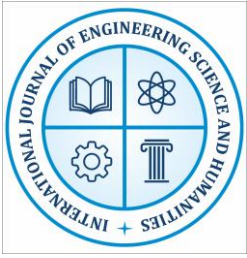
अध्ययन में गैर-संभाव्यता प्रतिचयन के अंतर्गत उद्देश्यपूर्ण (Purposive) एवं सुविधाजनक (Convenience) प्रतिचयन विधियों का संयुक्त उपयोग किया गया। उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन ने यह सुनिश्चित किया कि उत्तरदाताओं को विषय की व्यावहारिक समझ हो, जबकि सुविधाजनक प्रतिचयन ने सीमित समय एवं संसाधनों में सुलभ उत्तरदाताओं तक पहुँच को संभव बनाया। शहरी, अर्ध-शहरी एवं ग्रामीण—तीनों श्रेणियों के उत्तरदाताओं को सम्मिलित कर प्रतिनिधिकता बढ़ाई गई।

4.3 आंकड़ा-संग्रह के उपकरण

प्राथमिक आंकड़े एक संरचित प्रश्नावली के माध्यम से एकत्र किए गए, जो दो भागों में विभाजित थी। प्रथम भाग में जनसांख्यिकीय जानकारी तथा द्वितीय भाग में अध्ययन के पाँच आयामों से संबंधित कथन सम्मिलित थे, जिन पर उत्तरदाताओं की राय पाँच-बिंदु लिकर्ट स्केल ('1 = पूर्णतः असहमत' से '5 = पूर्णतः सहमत') के माध्यम से प्राप्त की गई। प्राथमिक आंकड़ों के पूरक के रूप में DPIIT/PIB, Inc42, Tracxn एवं WIPO जैसे स्रोतों से द्वितीयक आँकड़े भी एकत्र किए गए।

4.4 विश्वसनीयता एवं वैधता

प्रश्नावली की आंतरिक संगति का मूल्यांकन क्रोनबाख अल्फा (Cronbach's Alpha) के माध्यम से किया गया, जिसका मान 0.70 से अधिक रहा—जो स्वीकार्य विश्वसनीयता का संकेत है। अंतर्वस्तु वैधता विषय-विशेषज्ञों के परामर्श से सुनिश्चित की गई, तथा अंतिम सर्वेक्षण से पूर्व एक लघु पूर्व-परीक्षण (Pilot Test) कर अस्पष्ट कथनों को संशोधित किया गया।



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

4.5 सांख्यिकीय तकनीकें

आंकड़ों का विश्लेषण वर्णनात्मक सांख्यिकी (आवृत्ति एवं प्रतिशत), केंद्रीय प्रवृत्ति एवं प्रसार के मापकों (माध्य एवं मानक विचलन), तथा परिकल्पना-परीक्षण हेतु One-Sample t-Test के माध्यम से किया गया। परीक्षण मान (Test Value) 3.0 (तटस्थ बिंदु) तथा सार्थकता स्तर 0.05 निर्धारित किया गया। यदि परिकल्पित p-मान 0.05 से कम हो, तो शून्य परिकल्पना (H_0) अस्वीकृत एवं वैकल्पिक परिकल्पना (H_1) स्वीकृत की जाती है। One-Sample t-Test का चयन इसलिए किया गया क्योंकि अध्ययन का उद्देश्य यह जाँचना है कि प्रत्येक आयाम पर उत्तरदाताओं का औसत मत तटस्थ बिंदु से सार्थक रूप से भिन्न है अथवा नहीं। समस्त गणनाएँ उपयुक्त सांख्यिकीय सॉफ्टवेयर SPSS की सहायता से की गईं।

4.6 नैतिक विचार एवं अध्ययन की सीमाएँ

शोध की नैतिक गुणवत्ता सुनिश्चित करने हेतु सहभागिता पूर्णतः स्वैच्छिक रखी गई, प्रत्येक उत्तरदाता से सूचित सहमति प्राप्त की गई, तथा यह आश्वासन दिया गया कि उनकी जानकारी गोपनीय रहेगी एवं केवल शैक्षणिक प्रयोजनों हेतु प्रयुक्त होगी। तथापि, अध्ययन की कुछ सीमाएँ भी हैं: यह 350 उत्तरदाताओं के प्रतिदर्श पर आधारित है, अतः सामान्यीकरण सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए; गैर-संभाव्यता प्रतिचयन के कारण प्रतिदर्श-पूर्वाग्रह की संभावना को पूर्णतः समाप्त नहीं किया जा सकता; तथा आंकड़े स्व-प्रतिवेदित (self-reported) धारणाओं पर आधारित हैं, जो व्यक्तिगत पूर्वाग्रह से प्रभावित हो सकती हैं। इन सीमाओं के बावजूद, प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़ों की संगति अध्ययन के निष्कर्षों को पर्याप्त विश्वसनीयता प्रदान करती है।

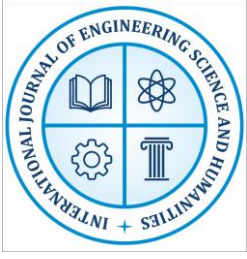
5. आंकड़ों का विश्लेषण एवं परिणाम

5.1 उत्तरदाताओं का जनसांख्यिकीय विश्लेषण

अध्ययन में सम्मिलित 350 उत्तरदाताओं की जनसांख्यिकीय विशेषताओं का विश्लेषण नीचे प्रस्तुत है। संक्षिप्तता हेतु आयु, लिंग, शिक्षा, व्यवसाय एवं निवास-क्षेत्र संबंधी प्रमुख वितरण एक समेकित तालिका में दिए गए हैं।

तालिका 1 : उत्तरदाताओं की प्रमुख जनसांख्यिकीय विशेषताएँ (N = 350)

चर (Variable)	श्रेणी	आवृत्ति (f)	प्रतिशत (%)
आयु (वर्ष)	18-25	112	32.0
	26-35	128	36.6
	36-45	68	19.4
	46 एवं अधिक	42	12.0
लिंग	पुरुष	214	61.1
	महिला	132	37.7
	अन्य	4	1.2
शिक्षा	स्नातक	138	39.4



International Journal of Engineering, Science and Humanities

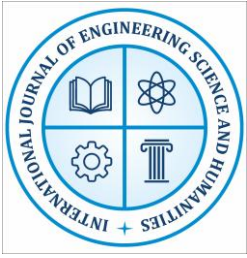
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

	स्नातकोत्तर	132	37.7
	अन्य	80	22.9
व्यवसाय	विद्यार्थी	96	27.4
	निजी क्षेत्र कर्मचारी	84	24.0
	उद्यमी/संस्थापक	70	20.0
	अन्य	100	28.6
निवास क्षेत्र	शहरी	196	56.0
	अर्ध-शहरी	104	29.7
	ग्रामीण	50	14.3

तालिका 1 से स्पष्ट है कि अध्ययन में अधिकांश उत्तरदाता (लगभग 68.6%) 35 वर्ष से कम आयु के युवा वर्ग से थे, जो स्टार्टअप के प्रति युवाओं की प्रबल रुचि दर्शाता है। लगभग 77% उत्तरदाता उच्च शिक्षित (स्नातक एवं स्नातकोत्तर) थे, जिससे प्राप्त प्रतिक्रियाओं की गुणवत्ता विश्वसनीय मानी जा सकती है। व्यवसाय की दृष्टि से उद्यमियों/संस्थापकों की 20% सहभागिता अध्ययन को व्यावहारिक प्रासंगिकता प्रदान करती है। निवास-क्षेत्र की दृष्टि से बहुलांश शहरी (56%) रहा, यद्यपि अर्ध-शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों की सहभागिता भी सुनिश्चित की गई। अध्ययन की प्रतिनिधिकता को और स्पष्ट करने हेतु वैवाहिक स्थिति, मासिक आय एवं स्टार्टअप-संबद्धता संबंधी वितरण तालिका 1अ में प्रस्तुत है।

तालिका 1अ : वैवाहिक स्थिति, मासिक आय एवं स्टार्टअप-संबद्धता का वितरण (N = 350)

चर (Variable)	श्रेणी	आवृत्ति (f)	प्रतिशत (%)
वैवाहिक स्थिति	अविवाहित	198	56.6
	विवाहित	146	41.7
	अन्य	6	1.7
मासिक आय (₹)	25,000 से कम	118	33.7
	25,000-50,000	104	29.7
	50,001-1,00,000	82	23.4
	1,00,000 से अधिक	46	13.1
स्टार्टअप- संबद्धता	प्रत्यक्ष संबद्ध	138	39.4



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

	अप्रत्यक्ष संबद्ध	122	34.9
	कोई संबद्धता नहीं	90	25.7

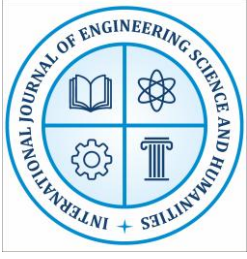
तालिका 1अ दर्शाती है कि 56.6% उत्तरदाता अविवाहित हैं, जो युवा वर्ग की प्रधानता के अनुरूप है। आय की दृष्टि से 33.7% उत्तरदाता ₹25,000 से कम मासिक आय वर्ग के हैं, जो विद्यार्थियों एवं प्रारंभिक-चरण के उद्यमियों की उपस्थिति को दर्शाता है। सर्वाधिक उल्लेखनीय यह है कि लगभग 74% उत्तरदाता (39.4% प्रत्यक्ष + 34.9% अप्रत्यक्ष) स्टार्टअप से किसी न किसी रूप में संबद्ध पाए गए, जिससे प्राप्त आंकड़े विषय के प्रति व्यावहारिक अनुभव को प्रतिबिंबित करते हैं तथा अध्ययन की वैधता को सुदृढ़ करते हैं।

5.2 वर्णनात्मक सांख्यिकीय विश्लेषण

अध्ययन के पाँच प्रमुख आयामों से संबंधित कथनों के माध्य एवं मानक विचलन की गणना तालिका 2 में प्रस्तुत है। पाँच-बिंदु स्केल पर 3.0 से अधिक माध्य सहमति की ओर संकेत करता है।

तालिका 2 : प्रमुख आयामों का वर्णनात्मक सांख्यिकीय सारांश (N = 350)

क्र.	अध्ययन आयाम	माध्य (Mean)	मानक विचलन (SD)	व्याख्या
1	सरकारी नीतियों का प्रभाव	3.89	0.682	उच्च सहमति
2	वित्तीय संसाधनों की कमी का प्रभाव	3.99	0.710	उच्च सहमति
3	तकनीकी नवाचार का प्रभाव	4.14	0.655	बहुत उच्च सहमति
4	उद्यमिता विकास में सरकारी समर्थन	3.78	0.745	उच्च सहमति
5	भविष्य की वृद्धि दर की संभावना	4.21	0.658	बहुत उच्च सहमति



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

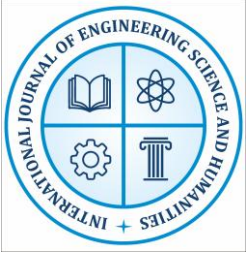
तालिका 2 से स्पष्ट है कि सभी पाँच आयामों का माध्य 3.78 से 4.21 के मध्य है, जो तटस्थ बिंदु (3.0) से पर्याप्त रूप से अधिक है। सर्वाधिक माध्य (4.21) भविष्य की वृद्धि दर तथा उच्चतम सहमति तकनीकी नवाचार (4.14) के संबंध में प्राप्त हुई। मानक विचलन के मान (0.655 से 0.745) यह दर्शाते हैं कि उत्तरदाताओं की प्रतिक्रियाओं में अपेक्षाकृत कम विचलन है तथा राय में पर्याप्त संगति विद्यमान है।

5.3 परिकल्पना परीक्षण (Hypothesis Testing)

पाँचों परिकल्पनाओं का परीक्षण One-Sample t-Test के माध्यम से किया गया, जिसमें परीक्षण मान 3.0, स्वातंत्र्य अंश (df) 349 तथा सार्थकता स्तर 0.05 रहा। तालिका 3 समस्त परिकल्पनाओं के परीक्षण-परिणामों एवं निर्णयों का समेकित सारांश प्रस्तुत करती है।

तालिका 3 : समस्त परिकल्पनाओं हेतु One-Sample t-Test परिणाम (N = 350, Test Value = 3.0, df = 349)

क्र .	परिकल्पना	Me an	SD	t-मान	p-मान	निर्णय
H 1	सरकारी नीतियों का प्रभाव	3.8 9	0.6 82	24. 401	< 0.0 01	H ₁ स्वी कृत
H 2	वित्तीय संसाधनों की कमी	3.9 9	0.7 10	26. 092	< 0.0 01	H ₁ स्वी कृत
H 3	तकनीकी नवाचार	4.1 4	0.6 55	32. 626	< 0.0 01	H ₁ स्वी कृत
H 4	सरकारी समर्थन	3.7 8	0.7 45	19. 638	< 0.0 01	H ₁ स्वी कृत
H 5	भविष्य की वृद्धि दर	4.2 1	0.6 58	34. 263	< 0.0 01	H ₁ स्वी कृत



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

तालिका 3 से स्पष्ट है कि पाँचों परिकल्पनाओं के लिए p -मान 0.05 सार्थकता स्तर से कम (< 0.001) प्राप्त हुआ। अतः सभी परिकल्पनाओं में शून्य परिकल्पना (H_0) अस्वीकृत तथा वैकल्पिक परिकल्पना (H_1) स्वीकृत की गई। t -मानों की दृष्टि से सर्वाधिक प्रबल प्रभाव भविष्य की वृद्धि दर ($t = 34.263$) एवं तकनीकी नवाचार ($t = 32.626$) के संबंध में पाया गया, जबकि अपेक्षाकृत न्यूनतम किंतु सार्थक प्रभाव सरकारी समर्थन ($t = 19.638$) के संबंध में रहा।

6. विवेचना (Discussion)

अध्ययन के परिणाम पाँचों कारकों के सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण प्रभाव की पुष्टि करते हैं। इस खंड में इन परिणामों की व्यापक संदर्भ में व्याख्या प्रस्तुत की गई है, ताकि केवल आँकड़ों तक सीमित न रहकर उनके व्यावहारिक एवं नीतिगत निहितार्थ भी स्पष्ट हो सकें।

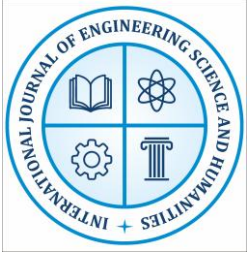
सरकारी नीतियों के प्रभाव (H_1) की स्वीकृति यह दर्शाती है कि 'स्टार्टअप इंडिया', 'डिजिटल इंडिया' एवं 'मेक इन इंडिया' जैसी पहलों ने उद्यमिता के लिए एक सक्षम वातावरण तैयार किया है। यह निष्कर्ष द्वितीयक आँकड़ों से भी मेल खाता है, जिनके अनुसार अक्टूबर 2025 तक मान्यता प्राप्त स्टार्टअप्स की संख्या लगभग 1.98 लाख तक पहुँच गई। उत्तरदाताओं की उच्च सहमति (Mean = 3.89) यह संकेत देती है कि नीतिगत ढाँचे की उपस्थिति स्वयं में उद्यमशील आत्मविश्वास का एक स्रोत है। यह परिणाम साहित्य-समीक्षा में चिह्नित संस्थागत-ढाँचे की भूमिका की पुष्टि करता है।

वित्तीय संसाधनों की कमी (H_2) की प्रबल स्वीकृति (Mean = 3.99, $t = 26.092$) इस तथ्य की पुष्टि करती है कि पूँजी की उपलब्धता आज भी प्रमुख बाधा है—जो 2022–2023 के 'फंडिंग विंटर' के व्यापक अनुभव के अनुरूप है। उत्तरदाताओं की धारणा यह रेखांकित करती है कि प्रारंभिक पूँजी, निवेश तक सीमित पहुँच एवं वित्तीय अनिश्चितता स्टार्टअप्स की प्रमुख बाधाओं के रूप में बनी हुई हैं। अतः वित्त-पोषण तक समावेशी पहुँच एक निरंतर नीतिगत प्राथमिकता बनी रहनी चाहिए।

तकनीकी नवाचार (H_3) का अत्यधिक उच्च t -मान (32.626) यह स्पष्ट करता है कि उत्तरदाता नवाचार को स्टार्टअप-सफलता का सबसे निर्णायक कारक मानते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग एवं ऑटोमेशन जैसी उभरती तकनीकों की ओर बढ़ता रुझान इस धारणा को और सुदृढ़ करता है। यह दर्शाती है कि दीर्घकालिक प्रतिस्पर्धात्मकता मूलतः तकनीकी विभेदीकरण (differentiation) पर निर्भर करती है।

सरकारी समर्थन (H_4) यद्यपि स्वीकृत हुआ, परंतु इसका अपेक्षाकृत निम्न माध्य (3.78) एक महत्वपूर्ण संकेत है—यह दर्शाता है कि नीतियों के अस्तित्व एवं उनकी ज़मीनी पहुँच के बीच एक अंतराल विद्यमान है। यह निष्कर्ष साहित्य-समीक्षा में चिह्नित 'पहुँच-अंतराल' की पुष्टि करता है। अनेक संस्थापक, विशेषकर गैर-महानगरीय क्षेत्रों में, उपलब्ध योजनाओं का पूर्ण लाभ नहीं उठा पाते; अतः जागरूकता एवं क्रियान्वयन को सुदृढ़ करना आवश्यक है।

अंत में, भविष्य की वृद्धि (H_5) का सर्वोच्च माध्य (4.21) उत्तरदाताओं के प्रबल आशावाद को दर्शाता है। यह आशावाद विशाल घरेलू बाज़ार, युवा जनसांख्यिकी एवं बढ़ते डिजिटल अंगीकरण जैसे संरचनात्मक कारकों



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

पर आधारित है। मानक विचलन के निम्न मान (0.655 से 0.745) यह दर्शाते हैं कि उत्तरदाताओं की राय में पर्याप्त संगति है, जिससे निष्कर्षों की आंतरिक विश्वसनीयता बढ़ती है। समग्र रूप से, अध्ययन के परिणाम प्राथमिक (सर्वेक्षण) एवं द्वितीयक (उद्योग-आँकड़े) दोनों स्रोतों के मध्य एक सुसंगत चित्र प्रस्तुत करते हैं—यह त्रिकोणन (triangulation) निष्कर्षों की वैधता को और सुदृढ़ करता है।

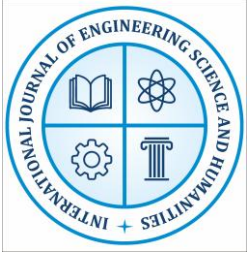
7. निष्कर्ष एवं सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन ने 350 उत्तरदाताओं से प्राप्त प्राथमिक आंकड़ों के व्यवस्थित विश्लेषण के आधार पर यह स्थापित किया कि सरकारी नीतियाँ, वित्तीय संसाधन, तकनीकी नवाचार, सरकारी समर्थन एवं भविष्य की वृद्धि-संभावनाएँ—ये सभी कारक भारतीय स्टार्टअप एवं उद्यमिता के विकास को सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। One-Sample t-Test के माध्यम से सभी पाँच परिकल्पनाओं की वैकल्पिक परिकल्पनाएँ स्वीकृत हुईं। तकनीकी नवाचार एवं भविष्य की वृद्धि सर्वाधिक प्रबल कारक के रूप में उभरे, जबकि सरकारी समर्थन का अपेक्षाकृत निम्न माध्य योजनाओं की पहुँच में सुधार की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष संक्षेप में इस प्रकार हैं: (i) अधिकांश उत्तरदाता (68.6%) युवा एवं उच्च शिक्षित थे तथा 74% स्टार्टअप से संबद्ध थे, जिससे आँकड़ों की प्रासंगिकता पुष्ट होती है; (ii) पाँचों आयामों का माध्य तटस्थ बिंदु से अधिक रहा, जो उच्च सहमति दर्शाता है; (iii) सभी पाँच परिकल्पनाएँ $p < 0.001$ पर स्वीकृत हुईं; तथा (iv) प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़े परस्पर संगत पाए गए। ये निष्कर्ष इस बात की पुष्टि करते हैं कि भारतीय स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र का विकास एक बहु-कारकीय परिघटना है, जिसे नीतिगत, वित्तीय एवं तकनीकी आयामों के संतुलित विकास द्वारा ही सतत बनाया जा सकता है।

अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जाते हैं:

- वित्त-पोषण तक समावेशी पहुँच सुनिश्चित करना तथा प्रारंभिक-चरण के स्टार्टअप हेतु सीड-फंडिंग एवं ऋण-गारंटी योजनाओं को सुदृढ़ करना।
- सरकारी योजनाओं के संबंध में जागरूकता बढ़ाना, विशेषकर टियर-2/3 एवं ग्रामीण क्षेत्रों में, ताकि नीतियों की ज़मीनी पहुँच सुधरे।
- तकनीकी नवाचार एवं डीप-टेक/AI आधारित स्टार्टअप हेतु अनुसंधान-समर्थन एवं 'धैर्यवान पूँजी' को प्रोत्साहित करना।
- नियामकीय अनुपालन को सरल बनाना तथा अनुमोदन-प्रक्रियाओं में विलंब कम करना।
- मेंटरशिप एवं इन्क्यूबेशन-सुविधाओं का भौगोलिक विस्तार कर समावेशी उद्यमिता को बढ़ावा देना।
- इन निष्कर्षों के नीतिगत एवं व्यावहारिक निहितार्थ स्पष्ट हैं। नीतिगत स्तर पर, अध्ययन यह संकेत देता है कि नीतियों के निर्माण के साथ-साथ उनके प्रभावी क्रियान्वयन एवं ज़मीनी पहुँच पर समान बल दिया जाना चाहिए। व्यावहारिक स्तर पर, संस्थापकों के लिए यह निष्कर्ष महत्वपूर्ण है कि तकनीकी नवाचार एवं सुदृढ़ इकाई-अर्थशास्त्र दीर्घकालिक सफलता के निर्णायक आधार हैं। निवेशकों के लिए, उत्तरदाताओं का प्रबल भविष्य-आशावाद भारतीय बाज़ार की दीर्घकालिक आकर्षकता की पुष्टि करता है।



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

- भविष्य के अध्ययन वृहत्तर एवं संभाव्यता-आधारित प्रतिदर्श, क्षेत्रवार तुलनात्मक विश्लेषण, बहुचर प्रतिगमन (multiple regression) जैसी उन्नत तकनीकों तथा संस्थापक-साक्षात्कारों के माध्यम से इन निष्कर्षों को और समृद्ध कर सकते हैं। एक अनुदैर्घ्य (longitudinal) अध्ययन यह भी जाँच सकता है कि समय के साथ इन कारकों का सापेक्ष महत्व किस प्रकार परिवर्तित होता है। समग्रतः, भारतीय स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र का भविष्य संभावनाओं से भरपूर है, बशर्ते चुनौतियों का दूरदर्शिता, अनुशासन एवं समावेशिता के साथ सामना किया जाए।

संदर्भ

1. नीति आयोग। (2024)। भारत का स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र: विकास, नवाचार एवं आर्थिक परिवर्तन। नई दिल्ली: भारत सरकार।
2. उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (डीपीआईआईटी)। (2024)। स्टार्टअप इंडिया वार्षिक प्रतिवेदन 2023-24। नई दिल्ली: वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार।
3. नैसकॉम। (2024)। भारतीय प्रौद्योगिकी स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र रिपोर्ट 2024। नई दिल्ली: नेशनल एसोसिएशन ऑफ सॉफ्टवेयर एंड सर्विस कंपनीज़।
4. इंडिया ब्रांड इक्विटी फाउंडेशन (आईबीईएफ)। (2024)। भारत में स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र। नई दिल्ली: वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार।
5. घोष, एस., एवं नंदा, आर. (2023)। उभरती अर्थव्यवस्थाओं में स्टार्टअप वित्तपोषण एवं उद्यमशील विकास: भारत के संदर्भ में एक अध्ययन। उद्यमिता एवं नवाचार पत्रिका, 9(2), 145-162।
6. शर्मा, ए., एवं सिंह, आर. (2022)। भारत में नवाचार-आधारित उद्यमिता एवं स्टार्टअप विकास। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एंटरप्रेन्योरशिप एंड स्मॉल बिजनेस, 46(3), 321-339।
7. वर्मा, पी., एवं कुमार, एस. (2021)। भारत में स्टार्टअप संस्कृति को प्रोत्साहित करने में सरकारी पहलों की भूमिका। जर्नल ऑफ पब्लिक अफेयर्स, 21(4), 1-12।
8. गुप्ता, वी., एवं बत्रा, एस. (2020)। भारतीय उद्यमशील पारिस्थितिकी तंत्र में स्टार्टअप के अवसर एवं चुनौतियाँ। जर्नल ऑफ एंटरप्रेन्योरशिप एजुकेशन, 23(5), 1-11।
9. विश्व बैंक। (2020)। ड्रूइंग बिजनेस 2020: 190 अर्थव्यवस्थाओं में व्यावसायिक विनियमन का तुलनात्मक अध्ययन। वाशिंगटन, डी.सी.: विश्व बैंक।
10. विश्व बौद्धिक संपदा संगठन (डब्ल्यूआईपीओ)। (2023)। वैश्विक नवाचार सूचकांक 2023: अनिश्चितताओं के बीच नवाचार। जिनेवा: विश्व बौद्धिक संपदा संगठन।
11. भारतीय रिज़र्व बैंक। (2024)। मुद्रा एवं वित्त पर प्रतिवेदन 2023-24: उद्यमिता एवं आर्थिक विकास। मुंबई: भारतीय रिज़र्व बैंक।
12. कोठारी, सी. आर., एवं गर्ग, जी. (2024)। अनुसंधान पद्धति: विधियाँ एवं तकनीकें (चतुर्थ संस्करण)। नई दिल्ली: न्यू एज इंटरनेशनल पब्लिशर्स।